

गङ्गायाः प्रसृतं हृद्यं कृतं तावदायुः त्रैलोक्यं
हृषीकेशं तस्मात् देवनागानां भाग्यं सत्यं
विमानात् ॥ ॥ ॥

गङ्गायाः प्रसृतं हृद्यं कृतं तावदायुः त्रैलोक्यं
हृषीकेशं तस्मात् देवनागानां भाग्यं सत्यं
विमानात् ॥ ॥ ॥

2434

शुभांगीनी नाम प्रदान

सर्वे लोकाः सर्वे भूतानि धनशोभा मेव च सिद्धानी
सर्वे कार्त्तव्ये साची लिंग फल ॥ ॥ ॥

प्रवाहि ४ उद्धत हे पृथ्वे कृष्णवर्णी कर्त्तव्ये सिद्धी
गति २ उद्धाचिता ज्ञानी ज्ञाने ॥ ॥

हे गीतात पृथ्वे पृथ्वे कृष्णवर्णी को गीता हे ते एषा
मा आगाने श्री ली मन्मा को वा पृथ्वे तन्को पूजा भावग
मा तव विद्ये कहे ॥ ॥ ॥

ਯੁਗਤਾਗਤ ਪੂਰਨ ਹੋਏ ਭੋਕ ਸਕਵਾ ਬਏ ਭਲਾ ਹੋਣਾ
ਨਿਪੁਰ ਹੋਣਾ ਜਥੇ ਨੇ ਆਜੇ ਲਿਖੀ ਹੋਣਾ ਲਾਮ ਹੋ
ਨਾ ॥ ॥ ॥ ॥

ਗੁਰੇ ਪਾਤ ਪੁਰ ਹੋਏ ਭੋਕ ਨੇ ਆਚਿਤਾਯਾ ਯੋਗ ਹੋ ਆ
ਗੀ ਲੀ ਕਾਹਾ ਹੋਣਾ ਗਾਹ ਵਲੀ ਧਨ ਮਿਯੇ ਬਲਿ ਹੋਣਾ
ਸੋ ਗੁਰੇ ਘਾਤੀ ਹਾਨਾ ਨਿਸ਼ਚਯ ਗਹਿ ਮਾਨਾ ॥ ੫ ॥

श्रीमद्भागवतप्रसन्न

नागस्य प्रसन्नकाशं नास्ति प्रविशेत्पुं माह भये धिना नि
या धन नास्ति विना संपत्ति ॥ ॥ ॥

प्रवासि पुष्टत हेष्टेष्टे प्रवासी प्रवासिते वक्तुं ते दुःखपा
यो भागेलो वाची वक्तुं ते दिन गार्ह्य आहुता निश्चये
गति मान्या ॥ ॥ ॥

हेमी वात पुष्टत हेष्टेष्टे हेमी को आयुर्धर्म मध्ये मष्ट
वा देवी उन्नदि सा सपि देवि वलया माहायां किनी
मुत को वात हे काया वाप्रा दु ई वाग मा गा ई पुजा
गन्धाम् तव निको हो गानिश्चय गति मान्या ॥

मृगदावतपुधत हेपुधेक पएईकाधनमिअचिवा
ई धन लोकाज्जेआनिगमाकाडी हात्तातवनिमो
होत्तानिअयेगरिमान्मासु ॥ ॥ ॥

गृहेवातपुधत हेपुधेक तेएएइसर्पकोबाम ध
मनआसुअध लो गृहेवाडी हात्तातवभलोहोला
मिअयगरिमान्मासु ॥ ॥ ६ ॥

इन्द्रा प्रसनी कृत्यामाहा पातक नाशनं नाल्या इ. म
 नादि प्रधनला भस्वनायेते ॥ ॥ ॥

प्रवाली गार पुच्छा हे पृथ्वी प्रदेस गायको भलो महि
 त वक्रु रोदिन पछी घा आगुला छे मक सल छे आ
 नंद छे वंदे ह नमाने मृ. सत्ये गति माना मृ ॥

हे गी गार पुच्छा हे पृथ्वी हे गी को आयुदा भलो छे
 ग्रह गरी को दोष छे ग्रह पनी को दोष छे ग्रह गरी
 को दान गम्मा ईश्वर देवता को भाव गम्मा तव नि
 को होला. सत्ये गति माना मृ ॥ ॥

मृगशावात पुष्पत हे पृथ्वी वहुतै नै को वात छते
मृगमान के छते चतु अभ्यास ते को नै सिद्धि होला
सत्ये गरि मान्याम् ॥ ॥ ॥ ॥

गृहे वात पुष्पत हे पृथ्वी आक्रा भागे को फल छते
सद्य को नै नै भूमा को वात छत को पुत्रा गन्ताम्
नव भला होला सत्ये गरि मान्याम् ॥ ॥ ॥

श्रीगणेशाय नमः

पावति प्रसन्न कृत्वा हसि पाप पूरकत पूनमाशवे
सिद्धि दुःख संतुष्टि विना स्याति ॥ ॥ ॥

प्रवासी वात प्रवृत्त हे प्रवृत्त प्रवासी हे मकुल लाला
सहित घातुं ला सन्देह नमाना म. सत्ये गतिमाना
॥ ॥ ॥ ॥

लाली वात प्रवृत्त हे प्रवृत्त लाली वात प्रवृत्त
देवि लाई भावना हे लो. वल्लई दि वास आरु नाथ
हजानि जो होला सत्ये गतिमाना ॥ ॥

कृगडा वात पुच्छत हे पृथ्वी ते ए चित्तमा को कृगडा उ
प्रनधे इमय जगत्ता तपो का जे सिद्धी होला ते ए
सतू ए ओफे भागला लक्ष्मी प्रसात होला सत्ये गरि मा
न्याम् ॥ ॥ ॥ ॥

गृहे वात पुच्छत हे पृथ्वी आपका भागे को फलध ते ए धा
को नजि के भूमा को वासध तस्को पुजा गन्पाम तव भ
लो होला सत्ये गरि मान्याम् ॥ ॥ ॥

एहनामप्रदान

वाएहनामप्रदान कृत्वा कार्जुनाखविनाखतीनमेकली
वितितमहाद्योदाहृत ॥ ॥ ॥

प्रवाहीवातपुच्छत हेपुच्छक प्रवाहीअकलागर्गतक
लाभयाकोष्टवकुतोदिनपछि कथिनसिवाअकलागि
अवगतिमानाह ॥ ॥ ॥

एगीवातपुच्छत हेपुच्छक एगीकोआयुर्दावरोकथिन
ए. अगकोआईआपतभयेष्टग्रहवतिमदाष्टपछिन
दिहाकोभूतकोपोषष्टकाणाकबूहलेपुजागन्ना
वनिकोहोलागिअवगतिमानाह ॥ ॥

कृगडावातपुच्छतहेपृच्छेक विगनाधमशियपापचित्त
मुद्धअभोग्गपत्तामुद्धे कलेसमत्तुहोज्जनिअयगति
मान्नाह ॥ ॥ ॥ ॥

गृहेवातपुच्छतहेपृच्छेक ते एचित्तमाक्को गृहेअप्रलुप्त
छे गृहेकाआसपास नूकवृक्षो ताहाभूत कोवासय
त्तो गृहेछोडि दाल्मातव भलो होला निअयगति
मान्नाह ॥ ॥ ॥ ॥

सूत्रेण प्रवृत्तनां कृत्वा कार्त्तिके सिद्धी कृत्वा प्रदा दुर्गमसाक्षे
यज्ञातीनामस्त्यच पुन पुन ॥ ॥ ॥

प्रवासी वारपुष्पत हे पृथ्वी प्रवासी आनन्द छः नाम द
दित नाम्ना के दिन पछि घा आर्तु नाम्ना गतिमाने
॥ ॥ ॥

हेगी वारपुष्पत हे पृथ्वी हेगी को आयु दानि को छ
ग्रहगती को दोष छ वेदना न गन्ना गृहपती को दान ग
या त वरि को होला सते गति मान्ना ॥ ॥

कृष्णकालप्रधत्तहेष्टक. यद्यवालो कलह होला
तंभूअयाम्. नोरासतू एव नैष्ट. द्वापनीनि अयमा
धन लाभ होला. सतेगारि मा. मा. ॥ ॥

गृहेवातप्रधत्तहेष्टक. गृहे उषसु भद्रगाष्टधन
लक्ष्मी आपता वृ. भा. ज. द्वा. उ. भ. य. न. न. माने भलो हो
ला. न. च. न. मो. ए. द्वा. सतेगारि मा. मा. ॥ १० ॥

श्रीपृथ्वीनामप्रसंग

पृथि प्रसन्नस्वचक्रं दुःखपाटिद्रुगासनं प्रबोधाप्रवेतस्य
न हस्य कृष्णगर्दी ॥ ॥ ॥

प्रमाणी वातपृष्ठत हृदयेक. प्रवाणी हृदयान्द हृदिनी
गदि का आङ्गा निश्चयगामिनाम् ॥ ॥

ऐगी वात पधत हे पछेक ऐगी को आयु दा भलो छ
 वनमा अघो एगि सुने छ दिग पाय द बला को हो
 सध पुर्व कलो जही न एगो दछि न से तो उत्र पहे
 लो गमा धो गा अछे तात से वर्ण का छिन कान
 वि दे गारि चा गमा लाई पूरा गदा या निवनि को
 हो एग निश्चये गरि भाम्ना ॥ ॥ ॥

कृगडावात पुछत हे पृथोकः गयादि नको कृगडावा
विणविंछः वडुते दिन गार् लाभ होला निश्चय
गति साध्यात् ॥ ॥ ॥

गृहे वात पुछत हे पृथोकः ते एचिता याजोगृहे
भय विरह धन लक्ष्मी लाभ होला निश्चय गति
साध्यात् ॥ ॥ ॥ ११ ॥

श्रीगुरुकुलनामप्रशन

गुरुकुलप्रशन कृत्वा कृदि कृत्वा नये वच. मनसा
चितीतं कार्ग्यं धन लाभो लूट प्रदा ॥ ॥

प्रवासी वात पुच्छत हे पृथ्वी. प्रवासी हे म कुलल
धन लाभ साहित्य तिन दिन हा आग्रह. लक्ष्मी गतिमा
न्यास ॥ ॥ ॥ ॥

हे गी वात पुच्छत हे पृथ्वी हे गी को भाग्य दी जलो छ
ते तु वेत्ता यक वृक्षो छ ते ल गी भूमा को स्थान
छ ते ल को पूजा गणा तव मि को हो ला. लक्ष्मी गति
मान्या ॥ ॥ ॥

कृगडावात प्रधरा हे पृथ्वी क ते ए सत्र एते रा पाई
पल्लि धन एत प्रसाद होला सते गति मा न्यास

गृहे वात प्रधरा हे पृथ्वी क ते ए चित्ता या को गृहे को :
आत्म पास एक वृक्षो धृ ताहा देवता को वास ध तन
का प्रजा गन्धाम् राव धन लक्ष्मी शुभ एता सते ग
ति मा न्यास ॥

॥

१२

॥

नमो भगवते वासुदेवाय

नमो भगवते वासुदेवाय कल्याणार्थं कार्त्तुं विनात्मनि मर
नं स्वकृतं ताप आपदं बहिर्गते दिने ॥ ॥

प्रवासी वात पुच्छे हृष्टे कृ. प्रवासी वि ली च छे घातु
कृष्टे पुकृष्टे न री छे बहो कि कृमा छे निश्चये गति
मान्याम् ॥ ॥ ॥

रोगी वात पुच्छे हृष्टे कृ. रोगी यर्म मा पन्मा को छे
आयुर्दा कथि न छे काला वाय हृष्टे काल च क्रुः
को पुजा गन्धाम ते जनि कथि न छे निश्चये ग
ति मान्याम् ॥ ॥ ॥

कृगडावात प्रकृत दे पृथक् मेरा सन्तु को नये छ तो
है सा छ तो कृगडा छाडी देई धन वाच गुता कथि
न छ निश्च यगति मान्यास ॥ ॥ ॥

गृहवात प्रकृत दे पृथक् तो ऐ चित्त या को गृह
अशुभ छ म तू होला धन को नाम होला स्व
गृह छाडी देई निश्च यगति मान्यास ॥ १३ ॥

श्री कृष्णनाम प्रसन्न

श्री कृष्ण प्रसन्न धन्या हसी पाप पूरक संवि आसीत
वक्तृपति धननाभ भुभु प्रदा ॥ ॥

प्रवासी प्रयात हे पृथ्वी प्रवासी सुख लोच आन
दनाभ संहित च आनना लोच गति मान्यासु ॥

रेगी वाट प्रयात हे पृथ्वी रेगी को आनुराग दूज
द दोष के हि आनना जो थिये न गृह लोच गति प्रा
न गन्यासु लोच नि को दान लोच गति मान्यासु ॥

ॐ गङ्गावाट प्रच्छादयेत् पृथक् तेन मनघमिलो घटो तेन
सुत्रको मनपापघ्नस्तौ गति श्री कृष्णले की ललाई वि
जा पाथोस्तौ गति तेन सुत्रको नास होला तं शुभ
या तलाई भूमि धन लाभ होला सत्ये गति मान्या ॥

गृहे वात प्रच्छादयेत् पृथक् तेन गृहे लक्ष्मी लाभ होला
कठिना सब सुख सर्व स्वयं पुत्र लाभ होला सत्ये गति मान्या
सर्व भलो होला ॥ ॥ १४ ॥

श्री अर्जुन नमः प्रदक्ष्य

अर्जुन प्रदक्ष्यं कृत्वा वसु पं संतोष कुम प्रदा देवभाक्ते
गुरु भाक्ते जिहि भाक्ते वा दितं ॥ ॥ ॥

प्रवाली वाट पुछत हे पृथ्वी प्रवाली आय कुसल छ
सा भ संहित को धा आरुणा सते गति नाम्ना ॥

रोगी वाट पुछत हे पृथ्वी रोगी को आय कुसल
छ भोज जाल देवता को दोष छ यजु वृक्ष फल कृष्ण
को वृक्ष सुनी धूप दि न मे विदे गति उजा गप्पा मृत
वर्नि को हो ॥ सते गति नाम्ना ॥ ॥

कृगडावातप्रधुत हेपृथोक तेसगमाकावा वरोकन
होएक पछि तेरा मनु भागी जाला धन पुत्र लाभ हो
ला विलास भयासु सत्य गति मान्यासु ॥ ॥

गहेवा प्रधुत हेपृथोक तेरा गहेचंचल छेपेयान
छोआसु धा होएक चित्र थी गन्यासु तव भलो हो
ला सत्य गति मान्यासु ॥ ॥ १५ ॥

श्रीचंद्रमाप्रदानं कृत्वा काम्यैर्लिखी माहात्म्यं पुण
नैः शिविनि हरे ते मोक्षे फलदायकं ॥ ॥ ॥

प्रवासी वात पुच्छत हेतुं धेय प्रवासी शुभ लीनो वली
ग नमि के वा देवमाथा न मा आह पुच्छत हेतुं लीन
मात्मा ॥ ॥ ॥

हेतु वात पुच्छत हेतुं धेय हेतु को आपुर्न निच्छेः
निच आर्त देवता को दोष ह ते लो धने मावगमा
न तव नि को हो जा लते गति मात्मा ॥ ॥

कृगडावात उद्धत हे पृथ्वी कृ प्राप्ति लीग वे हो गति
छ यक का कल ह प नी ती नि दान गया ह तव तो का न्ये
सिद्धी होला साये गति मान्या ॥ १६ ॥

गृह वात उद्धत हे पृथ्वी ले ए चिता या को गृह लु म
दः आदि से तो वस्तु ला भ हो वा प धि च न ल द मी सु व
संतोष हो वा लु म दः साये गति मान्या ॥ १७ ॥

श्रीगुरु नाम प्रशन

गुरु प्रशन मन्त्री नस्वक एग मा हा भ ज नक्षि फूल सर्व
का जे नो धन नस्व भवि वेती ॥ ॥ ॥

प्रवासी नात पुछ त हेर छक प्रवासी मन कला पर
हेर धन नाम होला था आउ ना को चितना एषि छ
निश्चय गति मान्या ॥ ॥ ॥

होगी वात पुछ त हेर छक होगी का आरु दा मरु
छः मन ति कला भै छ तेर च भै मा न्यपा जे
वाप छ नस्को दोष छ नस्को पुजा गन्या तव
नि को होला निश्चय गति मान्या ॥ ॥ ॥

कृगडावाट पुछत हे ए छेक. ते ए मय. ते सत्रु को जये छे
इ वृनि वृणाई कम कृगडा छोडी हात्मा तव भलो होला
निश्चय गति मान्या मार ॥ ११ ॥

गृहवाट पुछत हे ए छेक. चित्ता याको गृह अस
मद्य ते ए गृहका आल पास गोर छे तो से: लो धु
गा मा इत दु: तिवा म गद्य लो गृह छोडी हात्मा म
तव भलो होला निश्चय गति मान्या मार ॥ १२ ॥

श्री बृहस्पती नाम द्वितीय

देव गुरु सर्व मेला ह नी पाप ए छाने काम ह फल
पति विद्विनि फल दायक ॥

प्रवासी वात प्रधत ह पृथक् प्रवासी वात सहितः त
दि दुई दिन मात्र धन आई पूक्ये ला दुष्य नगा
मा लु साये गरिमा मा ॥ ॥ ॥

रोगी वात प्रधत ह पृथक् रोगी को आयुर्दा मलो छ
ते एई वृद्ध वात को दोष छ तस्को पुजा भगवान् त व
आफु बहुरिने जो हो एउ साये गरिमा मा ॥ ॥

मृगादावा प्रधतदेष्ट शोक अघितोए वानुवाए वागाल
छ पछि पछी तोए सनु को वचन उ प्रहेल्लः सनुजिति
सी आइल्लः सत्ये गति मान्नास ॥ ॥ ॥

गहेवा प्रधतदेष्ट छेकू तोए गहे का आस पास
यक पतल्लः वृक्षे छे तोए गहे वरि तो वहे न आस
उभ होल्लः सत्ये गति मान्नास ॥ ॥ ॥

कौटिल्यः नीतिश्रवण

एषाह प्रसंगेन आपकाजलसिद्धिस्तेन भोज्य
फित्तततस्मिन् विलाभफलप्रदाय ॥ १ ॥

प्रवासीवात प्रधनहेतुद्वयः प्रवासीवाहधानधिपवक्र
तौ जलाशयेनाभहोना किवातामारा गालविषोद्य
श्रुतान्ते चापि च आषणा लते गतिमान् ॥

एगीवात प्रधनहेतुद्वयः एगी कोषो बकेहि आई
नः गृहवटी को फलद्वय शलधातु गृहगटी गयाम्
नव आशुता एगि को होना लते गतिमान् ॥

कृगडावाट पुछताहेपुधोक तोए सत्रुवाटै वासोमाधलि
जालातोए इष्ट पुत्रलाभ होला भलोहोला सत्येगति

मान्यास ॥

॥

॥

गहेवाट पुछताहेपुधोक तोए चित्तमाको गहे लुभध
आफु भागेको फलध सो गहे छोड जानवोड छेना
मिनछेना सत्येगति मान्यास ॥ १९ ॥

श्री गणेशाय नमः

कं गाली नाम प्रसन्न स्वयं कमानाम भविष्यति निफलीन
कलनाम नाव दिने दिने ॥ ॥

प्रवासी वाद प्रवृत्त हे पृथ्वी प्रवासी को धन वस्तु गूना
इति ते धा आवल निश्चय गाली नाम

रोगी वात प्रवृत्त हे पृथ्वी रोगी को आयुर्दा गाली
इदं का मूष पलो छ कालो कृषा पुना गाली तव
निजो होला निश्चय गाली नाम ॥ ॥

कृपावात उद्यत हे पृथक् विना न शिप को लोभ गी
यहः लोभ के हि जै न निवा न गर्न स्वका थे के लोभ
होना निश्चये गी न मान ॥ ॥ ॥

यह उद्यत उद्यत हे पृथक् नो विना वा को धा आर
भर नो उद्यत न आर पात नो य न नो इत न ध
न गिजे वति होना नो ग हे धा नो लोभ न व भलो
होना निश्चये गी न मान ॥ ॥ २० ॥

श्री मंगलनाम प्रसून

श्री मंगलनाम प्रसूनं कृत्वा भूमि नत्र पृथिव्या
तिष्ठानां कार्त्तिके विदुः च लाभं वैव पुन पूजा ॥

प्रवासी वा पृथग हेतु हेतु प्रवासी मृत्यु ममे
हेतु वक्तु तेन लाभं कन कदाचित् भवेत्तेव चि
कन वा आहुता निश्चये गति मा न्ना ह ॥ ॥

हेतु वा पृथग हेतु हेतु हेतु को आयु र्वा गा हो
गार्द का र्द सा दादि नि को दोष हेतु वापे मा न्ना पे
छे एते वापे पुन गा मा न्ना तव नि को हेतु नि
अये गति मा न्ना ह ॥ ॥ ॥

ऊग उवात प्रधत हे पृथेक गलाई भले होला ते
 सगु को धेय होला ते सगु देवता राजा को तोफा
 न गला च न भयाल ते सगु मध गिर्ह सत्पोगादि
 माना ॥ ॥ ॥ ॥

गहेवा प्रधत हे पृथेक नाग हे सुभद्र धन धांने
 होला लक्ष्मी वरुणा को गहे सुभद्र सत्पोगादि ना
 माना ॥ ॥ ॥ ॥

श्रीगुरुधनमस्तुते

बुधप्रसारी कन्याकार्यपूर्ण प्रदाष्ट्योवेनिका
ज्योतिषि सचधर्मनामफलप्रदा ॥

प्रवासीवार उद्धराष्ट्युद्धकः प्रवासीधर्मफललला
भसहिम आधावाजेआई पुष्पेनिसुपसापगारि
मान्यालगा ॥ ॥

रोगीवार उद्धराष्ट्युद्धकः रोगीको आयुर्दीनिको
दत्ताष्ट्युद्धको वायुको दोष दत्ताष्ट्युद्धको पुष्पाग्न्या
ग्रहको भावग्न्याष्ट्युद्धको दोष दत्ताष्ट्युद्धको
दत्ताष्ट्युद्धको ॥ ॥

मृगशावा प्रदत्त हे प्रदेवः ते ए क ए सानो धः सानु
ते ए वा लो सा धः अ धि नि पान गन्ना प धीः ते ए वा यो
सि धा हो नः सानो गी रि सा न्ना धः ॥

मृगशावा प्रदत्त हे प्रदेवः ते ए क ए सानो धः सानु
मृगशावा प्रदत्त हे प्रदेवः ते ए क ए सानो धः सानु
उग्रसे न्न न माने सः सानो गी रि सा न्ना धः ॥ २२ ॥

श्रीदेविनाम प्रसन्न

देवी नाम प्रसन्नं कृत्वा हं त्रिप्राप पुनराकृती पृष्टे
आर्त्तां जायते सिद्धीत्यर्थं धनं गन्तामो जने प्रदा ॥

प्रतापीनाम उद्यतद्वेषधोक. प्रतापी वेमकुल
लाभसाहितसि. नो गति द्याकुलानां ईश्वरजन
सते गतिमानसः

ऐसी वाट प्रहस दे प्रबोक् ऐसी जो आय दी मनो
छ साँकल देवता छ तस्को दाव छ तस्को पु
जागनाल तब नि को होला सत्ये गरि मान्नाल ॥

मृगशाखा पुष्ट हेष्टे क. तोमरा ला पछी वहुने
छ विपु गला तं द्या भया पछी तोमरा ला आ
के भागला धनला भ होला लोगा विमानाहा ॥

मृष्टेया पुष्ट हेष्टे क. तोमरा ला का गृष्टे
भष्ट तोमरा ला यति छ भष्टे ला भष्टे ला
भुष्ट छ लोगा विमानाहा ॥ २३ ॥

श्रीसनिश्च नाम प्रकरण

सविश्वा नाम प्रकरण कृत्वा कार्ये नाम भविष्येति
स्वर्क नाम बद्ध इव सर्व स्वर्क कले सन् ॥

प्रवासी नाम प्रवृत्त हेतु चेत् प्रवासी स्मृता कला
होला घाको मद्रो कि क मानी एषो हे पा उक्ता
ता भाषेते हे निश्चयगति मान्यात् ॥

लंगी नाम प्रवृत्त हेतु चेत् लंगी को उक्त्युपात्ता
हो ध भूत को दोष हे फलान् कृष्णाने उतागना
स गृहे को दान गम्पान् तव नि को होला निश्चय
गति मान्यात् ॥ ॥

ॐ गंगावाटे पुछरा हे पृथ्वी ते एसा गुण वज्रा घट न
पनि अनाथ पाए पाको धन गिमे लोभि छु पाकि
छ ते एसा वै न बुझि विचार गन्पान ते ए मन्त्रो
हो वै न निश्चय गति मान्ना दल ॥

गट हे वाटे पुछरा हे पृथ्वी ते ए चित्त माको गट हे अ
भुन छ दुःख कलस होला धन गिय बलि होला
ते गट हे छोटी दान्ना सबानि को होला सत्ये गति
मान्ना ॥ २४ ॥

श्रीगुरुभामप्रसाद

गुरुभामप्रसादं स्वच सर्वकार्ये तस्मिन् प्रसादं का
र्यं गायन्ते नानुभूयते ॥ ११ ॥

प्रवासीवाट उद्धत हे पृथ्वी प्रवासी कलन दूवसीचो
लाभसंग नमिजे वा आ ई उ क लः उ म रा ज न मान्या
ह सतोगरी मान्याह ॥ ११ ॥

हेगीवाट उद्धत हे पृथ्वी हेगीको आद्यपि निमोद्ध
तोद्यत राजवगी मान्याको वायु ह वाकि निह माहि
ह वायुको पुजा मान्याको रुपये गन्ना न वनि को
होवा सतोगरी मान्याह ॥ ११ ॥

मृगडा नाट प्रकृत हे पृष्ठे कृ. गवादिन को मृगडा सा
विहा विं छ तो ए हातु मिली कन नास गनु हिचेः
नरु भौ हातु ए साध मा गमा ए हातो गदि मान्मा
न ॥ ॥ ॥

गृहे वाट प्रकृत हे पृष्ठे कृ. तो ए गृहे का आस पास
कला वृक्षे छ जल का छे ड देवता का थान छ
गृहे भु म छ न देह न मान्मा ए हातो गदि मान्मा ए
॥ ॥ ॥ ॥ ॥

श्री गुरुस्थी राजा प्रसन्न

गुरुस्थी राजा प्रसन्न सर्वकार्ये म क्ली प्रदा इ
र्गो नामो ह यथाति लभस्व पुन पुन ॥

प्रवासी वा पुद्गल हेतु हेतु प्रवासी ना चलन वे
म क्लृप्त लो लोभ सहित थोरे दिन मा घा आयवा
इ व नमान्ना ल लोभ गति मान्ना ल ॥

हेतु गी गा पुद्गल हेतु हेतु राजा को आयुदा
निको ह कोहे वाग्ना को आयुको विवेक तो ए
ई ला देवता को आवगन्ना ल तव निको हेतु
ल लोभ गति मान्ना ल ॥

मृगगावा ७५ हेष्टेष्टः तेष्टव सचोष्ट तेष्टव
ष्ट वपोष्टिनेष्ट सुष्टमाष्ट सुष्टि मंत्रगन्पा मिष्ट
न तपोष्टीष्ट आष्ट मोगाष्ट तेष्टिष्टाष्ट सपोष्ट
ष्टिमाष्टाष्ट ॥ २१ ॥

गष्टेष्ट ७५ गष्टेष्टेष्ट कपोष्टिष्टा माष्टो गष्टेष्ट
भष्ट तपोष्ट गष्टिष्टा आष्ट पाष्ट यष्ट देवताष्ट रष्टिष्ट
उष्टा गष्टाष्ट तपोष्टुष्ट सपोष्टोष्ट रष्टिष्टाष्ट होष्टाष्ट
तेष्टाष्टिष्टाष्टाष्ट ॥ २२ ॥

भीमसेन नाम प्रदान

त्रिमल्लप्रदान का जे विही फली प्रदा सर्व पाप
क्षोय पति धन लाभ सुख प्रदा ॥ ॥

प्रवासे वाट उधत हे पदे क प्रवासी तेम कुल
ल जा न लहित बापो वा आवणा उम यदान
मान्या ॥ सापे गति मान्या ॥ ॥

हेगी वाट उधत हे पदे क हेगी को आयु दी मि
को छ ईसा देवता को दोष छ त्रिमल्ल को भा
कल छ भीमसेन लाई ईसा देवता को भाव गवा
ल ॥ तब नि को होला सापे गति मान्या ॥

मृगावापुष्टतदेषु देवैः यकवा एतापुष्टे
मृष्टोला तोलास्तु अनाधलो न गर्धन वदोषि
गलपु तीकुले मया ते एवमुक्तं आमे नागला सापे
गादिमान्यास्तु ॥ ॥ ॥

मृष्टेवापुष्टतदेषु देवैः ते एव चित्ता याको गृहे
भुम्भु भलोष्ट तोलाको कल देवता को दोषधन
को पुजागम्यास्तु तव भलोष्टोला सापेगादिमान्यास्तु
॥ ॥ ॥ ३७ ॥

हुर्गोचन नाम प्रदान

हुर्गोचन प्रदान कार्ये हा हो रात थै वस न माने
सु कर्म ताव बुधि हए नै वच ॥

प्रवासी वात पुछत हे पछे क प्रवासी ले दुःख
क ले हा वहु ते जमो वध न पनी साती भयो
वहु ते दिन गाई पा आ दुगा ॥ निश्च यगति
मान्या ॥

होगी वात पुछत हे पछे क होगी को आयु पा
मर्द छ देवता लाई भाव गम्यात तव नि को हो ला
देवता लाई दु ठामा को भाव चलाई छ ल आ
का हात ले दुःख पाई छ निश्च यगति मान्या ॥

मृगावापुष्टत हेष्टेक ते ऐज प्रावी पसिक
म्यागति छ आका हात नांम इ म्या आने गति
नि एसा दु जित ना ते ऐ नांम छ ॥

गृहे वापुष्टत हेष्टेक ते ऐ गृहे म्या म्या छ
अली लोम मृतु हो ना उत पादि निको नांम छ
म्या गृहे छाडी हो ना तव निको हो ना निश्चय
गति म्या म्या ॥ १ ॥ २८ ॥

श्री भवानी नाम प्रदान

भवानी प्रदान कृत्वा लाते लिखि दायक दुसादातु
विना साये धन पूरा प्रदायक ॥

प्रवासी वा ७६ ६६६६६६ प्रवासी धन सहित चापोघर
आवला भयनामास सत्पेगति मान्या ॥

रुगी वा ७६ ६६६६६६ रुगी को आयु दी भलोछ भ
वानी को आवग मास ग्रह पती को धन गमास तव
निको होला सत्पेगति मान्या ॥

कृगगावापुछतः हेष्टेवः तेष्टेवितायाको कृगगा
मलोष्टः यकवाकुलः हेष्टेवापुछीतेष्टेसूत्रा
के भागगाः भयनमान्माष्ट ॥ ॥

गृष्टेवापुछतः हेष्टेवः तेष्टेवितायाको गृष्टेभुभ
भुभष्टः मोगष्टे नष्टेआष्टः सत्येगतिमाष्ट ॥
॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

श्री वागवानी सरस्वती नाम प्रस्तन

वागवानी प्रस्तनः सर्वसत्त्वविनात्मनीः व्याख्यान सर
गर्गनि निःशब्दे प्रण पूने ॥ ॥ ॥

प्रवासी नाम प्रवृत्तः प्रवृत्तः प्रवासी वेमकसल छ भो
वेमक सलहिरा नामो वा आवृत्तः सलहिरा नामा
स ॥ ॥ ॥

हेगी वाद प्रवृत्तः प्रवृत्तः हेगी को अत्युपनि को
देविलाई भावकीन छ प्रो भावकी को भावगमास प्र
हृदयन गमास तविको हेला सलहिरा नामा ॥

रुगडावा पुछत हे पछे क मिठो वचन गन्नासु सारु
टो एहात छै ना धन लभी सूखसो वाव हो ना सारो
गति मान्यासु ॥ ॥

गहेवा पुछत हे पछे क ते एहिता या को गहे सुभ
धन लभी पुत्र ला भ हातो गहे चिछे जोग हे घा
ना नछो मासु मे ए वचन सारो गति मान्यासु ॥ ३०

श्री कामधेनु नाम प्रसन्न

कामधेनु नाम प्रसन्नः दक्षिणापः पुण्ड्रस्तम्भः कामधेनुः
मंगला पुत्रः कामधेनुः ॥ ॥ ॥

प्रवासी वा पुण्ड्रः प्रवासी धनः कामधेनुः
स्वयं गतिः प्रवासी धनः कामधेनुः ॥ ॥ ॥

एगी वातः पुण्ड्रः एगी वातः आयुः प्रवासी
पुण्ड्रः दोषः कामधेनुः आयुः प्रवासी
कामधेनुः तव आयुः कामधेनुः ॥ ॥ ॥

रुगडा बाट प्रधत्त हे पृथक्. तो हे सत्ता पद दे मा
जी मागला साधामा वागन पनि सत्ते न ती जित
॥ वचन मो ए. सत्ते गति मान्यास ॥

गृहे बाट प्रधत्त हे पृथक्. तो गति मागो गृहे का =
आश पास मा. यक वृक्षे ए. देवता को वाला. तो लो
प्रजा मन्त्रा ॥ तव भक्तो होया. सत्ते गति मान्यास ॥

॥

॥

॥

३१

॥

श्री केशनाम प्रसन्न

केशस्ये प्रसन्नं कृत्वा कर्त्तुं नास्त्यभविष्यतीति देवकर्त्तुं
भवेत्तस्ये विष्णुसचः शुभसूच्ये ॥

प्रवासी वा पृथक् हे पृथक् प्रवासी कृत्वा कर्त्तुं
धनं नास्त्यभविष्यतीति देवकर्त्तुं
वशात् नित्यं गन्ताम् तव वा आत्मा निश्चयग
तिमान्नास्ति ॥

हे गी वा पृथक् हे पृथक् हे गी को आयुर्दिवः पूर्व
दिवा का राति चलीति सति पक्षी मद्यो वातमा पुत्रा
गाति दयात् तव निम्नो हे गी सत्ये गति मान्नास्ति ॥

श्री राम चंद्र नाम प्रसन्न

रामचन्द्र प्रसन्न हसी पाप पूर करूँ। एयत्र ह्ये एषो
लोका साह धन पूरे ॥ ॥

प्रवासी वार प्रहस ह्ये ह्ये कः प्रवासी गानिमानि
लोभा सहि धा आहुला ॥ निश्चये गानिमाना ॥

रोगी वार प्रहस ह्ये ह्ये कः रोगी को आयु दी प्रह
ह्ये रोगी को देवता को दोष ह्ये प्रहसात गन्ना
तवर्ग को होला ॥ सत्य गानिमाना ॥ ॥

कृगडावा प्रधन हे पृथ्वः ते ए सतु धि गराध
ते सतु चाले गराध यक वा वदा कल ह होला
पद्य ते ए सतु ए को नास होला ते सु भुयास
सत्ये गाणि मा मास ॥ ॥ ॥

गृहवा प्रधन हे पृथ्वः ते ए चित्ताया को ग
हाने ए सतु भलो सी तो सतु धन ल जी प्राप
ती कु ननु वचन मे ए सतु गाणि मा मास ॥ ३
३ ॥ ॥ ॥

श्री लक्ष्मणनमः प्रसन्न

लक्ष्मणन प्रसन्न सर्व स्वक विना सितः त्रिभुवन स
कित काज्य फल प्राप्ति दियो दियो ॥

प्रवासी वा पुच्छत हे पृथ्वीः प्रवासी लाभ संहिता
वा आर्द्धलाः सत्ये गति मान्याम् ॥

एगी वा पुच्छत हे पृथ्वीः एगी को आयु दो नि
दोष के हि वि यन सुभ का प्रगत्याय ग्रहग
दी को फल द्य सुभ नि को हो ला सत्य गति
न्याम् ॥ ॥ ॥ ॥

मृगडावाप्रधत्तः देवदेव ते हो मनसतो धर्मदे
ते एतत्तु एका मन पापदे यकवा एव एतलह
होला पछी ते एतत्तु एताला ती सुभयासु स
मेगटि मोन्यासु ॥ ॥ ॥

महेवाप्रधत्तः देवदेव ते एतदिता याको गदे
सुभयधन लक्ष्मी सुभयप्राप्ती उनिधन होला
चित्तचै चलागगासु विराग्यासु सत्येगटिग
न्यासु ॥ ॥ ॥ ३४ ॥

श्रीश्रीतादेवीनामप्रसन

श्रीतादेवी प्रसननाम सर्वोपापविनाशप्रदं लभते
च फल प्राप्ति तया येन पति दुःखं ॥ ॥

प्रवासी वात उद्यत हे पृथ्वी प्रवासी चो रैक स भै चो
हे हिम माद्य आवता सत्ये गति मान्या ॥ ॥

रुग्णी वात उद्यत हे पृथ्वी रुग्णी को आ पुनरि को
हे वदो साधो जगो होवे न देवी का दोष ह तको
पुना मया ह तव नि को होला भय न मान्या ॥

॥ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

श्री देव एज इद्र दर्शन

ईंद्रस्य दर्शन इत्या. देव एज तथैव च भवेत् । तेनाद्यते
नातु नही शये ॥ ॥

प्रवासी वा उद्धत हे पृथक् प्रवासी

एगी वा उद्धत हे पृथक् एगी को आयुर्पात्रिको ह व
नाम्यो लक्ष्मि नि दाई ह वन देवता को दोष ह
वपोकला हर्षि को नै विदेगा पुत्रा गन्ता तव
नि को हो सत्पे गति मान्या ॥ ॥

मृगजा वा उद्धत हे पृथक् ते ए सत्पे एव च न
सुदेगा भागी जाला सत्पे गति मान्या ॥ ॥

गृहे वा उपछाते एवेकं गृहं चित्तायाको गृहे भुञ्ज
छेन भुञ्ज भुञ्ज अर्की हो वल गस्याको हेछ धनना
रा शिव धारा होला त्यो गृहे छोडी हाप्पा वचन
मोए छ सत्ये गति मान्ना सत्ये ३६ ॥

श्री हनुमान नाम दर्शना
हनुमान दर्शनी सर्व सरा विन स्याति माहात्म्य
बुद्धि सत्ये व स्वभाष्य भूष प्रजा ॥

प्रवासी वा उपछाते एवेकं प्रवासी छेन असल गति
छेन भक्त सति वा आठला संदेह न मान्ना सत्ये
गति मान्ना सत्ये ॥ ॥

होगी वा प्रसाद दे देक होगी का आयु दी नि को द के
 दिनामा को पियला प्रसादी गन्ना सु तव नि जो दो
 ला सते गति माना ॥ ॥ ॥

कृगडा वा प्रसाद दे देक तो कृगडा सौ बो द थक वा
 वयो सु भनो ला तो सदा आ फे भाग ला तो हर्ष वला
 ई हो ला सु भनो ला सते गति माना सु ॥ ॥

गृह वा प्रसाद दे देक तो चित्त या को गृह ती
 आ फे धा डला नद्धा आ सु वचन मो सते गति मा
 न्या सु ॥ ॥ ३७ ॥